|  |
| --- |
| 25. Februar 2024 |
| **02. Fastensonntag B** |
| Erste Lesung: Gen 22,1-2.9a.10-13.15-18; Zweite Lesung: Röm 8,31b-34; Evangelium: Mk 9,2-10 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 142, 1+2 | Zu dir, o Gott, erheben wir |
|  | GL 283, 1-4 | Aus der Tiefe rufe ich |
|  | GL 638, 1-4 | Nun ist sie da, die rechte Zeit |
|  | GL 481, 1+2+6! | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 4 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 116.10 u. 15-19 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 629, 3 | Ich gehe meinen Weg vor Gott |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 543, 1+3+4 | Wohl denen, die da wandeln |
|  |  |
| Ruf vor dem Evangelium: | GL 584, 9 oder GL 560, 1 oder GL 644, 6 |
|  | Vers: |  |
|  | *Aus der leuchtenden Wolke rief die Stimme des Vaters:* |
|  | *Das ist mein geliebter Sohn;* |
|  | *auf ihn sollt ihr hören.* |
|  |  |  |
| Credo: | sprechen |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 363, 1-3 | Herr, nimm auch uns  |
|  | GL 422, 1-3 | Ich steh vor dir |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 196 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 497, 7 | Jesus, den verborgen |
|  | GL 203 | O Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 745, 1!+2 | Herr, du kamst uns zu erlösen |
|  | GL 364, 1+3+5 | Schönster Herr Jesu |
|  | GL 372, 1+3+6 | Morgenstern der finstern Nacht |
|  | GL 360, 1-3 | Mein schönste Zier |
|  | GL 377, 1+2 | O Jesu, all mein Leben bist du |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 429, 1+2+5 | Gott wohnt in einem Lichte |
|  | GL 216, 1!+2 | Im Frieden dein |
|  | GL 455, 1+4! | Alles meinem Gott zu Ehren |